

TULSĪ PRAJÑĀ

(A UGC-CARE Listed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year : 50 • Vol. 198 • Issue : April-June, 2023



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

A University Dedicated to Oriental Studies & Human Values

Ladnun - 341306, Rajasthan, India



Editorial and Advisory Board

Padma Shri Dr. Kumarpal Desai

Professor Emeritus, Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun
Managing Trustee, Institute of Jainology (India),
Managing Trustee, Gujarat Encyclopedia Trust (Ahmedabad)

Prof. R.S. Yadav

Vice-Chancellor
Baba Mastnath University, Asthal Bohar
Rohtak, Haryana

Prof. M.R. Gelra

Founder Vice-Chancellor and Emeritus Professor
Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun-341306, Rajasthan

Prof. Naresh Dadhich

Former Vice Chancellor
Vardhaman Mahaveer Open University,
Kota, Rajasthan

Prof. Dayanand Bhargava

Emeritus Professor, JVBI, Ladnun
Former Chairman, Veda-Vijnana,
J.R. Rajasthan Sanskrit University, Jaipur

Prof. Jitendra B. Shah

Founder & Pioneer Trustee, Shru Ratnakar,
Former Director, L.D. Institute of Indology, Ahmedabad

Prof. S.R. Vyas

Former HOD, Dept. of Philosophy, MLSU, Udaipur
Former Member Secretary, ICPR, HRD Ministry, New Delhi

ISSN 0974-8857

Tulsī Prajñā

(A UGC-CARE Listed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year : 50

Vol : 198

Issue : April-June, 2023

Patron

Prof. Bachhraj Dugar
Vice-Chancellor

Editors

Prof. Damodar Shastri

Prof. Nalin K. Shastree

Guest Editor

Prof. Jagat Ram Bhattacharyya

Managing Editor

Mohan Siyol

Publisher

Jain Vishva Bharati Institute

Ladnun - 341306 (Raj.) India

Contact us: tulsiprajnarj@gmail.com

+91-9887111345

CONTENTS

Āgama	01
Ācārya Mahāprajña	
Articles	
चिंतन के विकास में जैन आचार्यों का योग <i>आचार्य महाप्रज्ञ</i>	15
परमात्मप्रकाश : आध्यात्मिक-मूल्य <i>डॉ कमलचन्द सौगाणी</i>	33
The Problem of Samjñā in Jain Epistemology and Psychology <i>Muni Kaushal Kumar</i>	43
Religious Engagement: Virtue Ahimsā <i>Samani Rohini Pragya</i>	60
Psycho-Social Studies to Investigate Effects of Yoga-Preksha-Dhyan on Aggressiveness of School Children (Urban Area) <i>Prof. Viney Jain</i>	66
Reading Dalit Politics in Uttar Pradesh: Conflicts and Cooperation <i>Abnish Kumar</i> <i>Rashmita Ray</i> <i>Asutosh Pradhan</i>	97

चिंतन के विकास में जैन आचार्यों का योग

Tulsi Prajñā
50 (197)
April-June, 2023
ISSN : 0974-8857

आचार्य महाप्रज्ञ*

सारांशिका

जैन आचार्यों की दो परम्परा थी—1. श्रद्धावादी और 2. तर्कवादी। तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपाद्य तत्त्वों को श्रद्धावश सत्य मानना चाहिए। वहां तर्क का कोई स्थान नहीं—यह श्रद्धावादी मत था। तर्कवादी मानते थे कि तीर्थंकर सत्य ही बोलते हैं, तर्क से भी उसे काटा नहीं जा सकता। जैन आचार्यों ने दोनों अतिवादों से पृथक् समन्वयात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा—आगम प्रतिपादित तत्त्व दो प्रकार के हैं—(1) हेतुगम्य, और (2) अहेतुगम्य। जो स्थूल पदार्थ हैं, उन्हें तर्क की कसौटी पर भी कसा जा सकता है, अतः वे हेतुगम्य हैं, किंतु जो अतीन्द्रिय, सूक्ष्म पदार्थ हैं, उन्हें आगम-प्रमाण द्वारा ही जाना जा सकता है, वहां तर्क का कोई स्थान नहीं।

उक्त समन्वयात्मक दृष्टिकोण के प्रथम प्रवर्तक थे—आचार्य सिद्धसेन। उक्त समन्वयात्मक विचार-सरणि को आगे बढ़ाने वाले आचार्य समन्तभद्र, आचार्य अकलंक, आचार्य हरिभद्र, आचार्य देवनन्दी, आचार्य हेमचन्द्र व उपा. यशोविजय जी आदि परवर्ती आचार्य थे।

यह समन्वयात्मक दृष्टिकोण अन्य धार्मिक विषयों में भी प्रस्तुत किया गया। सोमदेव सूरि ने लौकिक धर्म को लोकाश्रित और पारलौकिक धर्म को आगमाश्रित बताया। आचार्यों ने माना कि साधना का लक्ष्य और उसका साधन, दोनों शुद्ध पवित्र होने चाहिए। आचार्य भिक्षु ने इस मत का प्रबलता से समर्थन किया।

उक्त समग्र समन्वयात्मक विचारधारा का संक्षिप्त इतिहास यहां प्रस्तुत है।

मुख्य शब्द

श्रद्धावाद, यथार्थवाद, हेतुवाद, साधन-शुद्धि।

श्रद्धावाद-हेतुवाद

चिंतन की तुलना सरिता के उस प्रवाह से ही जा सकती है जिसका उद्गम छोटा होता है और गतिशील होने के साथ-साथ वह विशालकाय होता चला जाता है। भारतीय मानस श्रद्धा-प्रधान रहा है। उसमें तर्क-बीज की अपेक्षा श्रद्धा-बीज अधिक अंकुरित हुए हैं। इसीलिए यहां मौलिक चिंतक अपेक्षाकृत कम हुए हैं। धर्म के क्षेत्र में कुछ महान् साधक, अवतार या तीर्थंकर हुए हैं। वे हिमालय की भांति अत्यन्त महान् थे। उनकी महानता तक मौलिक चिंतक भी नहीं पहुंच पाते थे। फलतः उनके प्रति चिंतकों का श्रद्धानत होना स्वाभाविक था। साधारण जन तो श्रद्धानत था ही, किंतु साधारण जन की श्रद्धा और चिंतक की श्रद्धा

* आचार्य महाप्रज्ञ, द्वितीय अनुशास्ता, जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनू, राजस्थान।

डॉ कमलचन्द सौगाणी*

सारांशिका

आचार्य योगेन्द्र द्वारा रचित 'परमात्मप्रकाश' एक आध्यात्मिक ग्रन्थ है। उसमें मूल्यात्मक जीवन के बाह्य रूप के साथ-साथ आन्तरिक पक्ष को भी सुदृढ़ करने की प्रेरणा दी गई है। आत्मीय शुद्धि व पवित्रता की दृष्टि से तीन क्रमिक अवस्थाएं हैं—(1) बहिरात्मा, (2) अन्तरात्मा, (3) परमात्मा। बहिरात्मा की अवस्था में व्यक्ति स्थूल देह से तादात्म्य रखता है, संसार-आसक्ति में मूर्छित-सा रहता है। अन्तरात्मा की स्थिति में, व्यक्ति के अन्दर आध्यात्मिक लौ जागृत होने लगती है, वह जब बाह्य यात्रा को छोड़कर, अन्तर की जागृत आत्मा से आगे बढ़ते हुए एक नवीन जीवन-दृष्टि प्राप्त कर, परमशुद्ध बन जाता है तो 'परमात्मा' कहलाता है।

प्रस्तुत लेख में उक्त तीनों आत्मिक स्तरों की सरल-स्पष्ट विवेचना की गई है और परमात्म-प्राप्ति की साधना को हृदयंगम कराया गया है।

मुख्य शब्द

आध्यात्मिक मूल्य, मूल्यात्मक जीवन, बहिरात्मा, अन्तरात्मा, परमात्मा।

यह सर्वविदित है कि मनुष्य अपनी प्रारंभिक अवस्था से ही रंगों को देखता है, ध्वनियों को सुनता है, स्पर्शों का अनुभव करता है, स्वादों को चखता है तथा गन्धों को ग्रहण करता है। इस तरह उसकी सभी इन्द्रियां सक्रिय होती हैं। वह जानता है कि उसके चारों ओर पहाड़ हैं, वृक्ष हैं, मकान हैं, मिट्टी के टीले हैं, पत्थर हैं इत्यादि। आकाश में वह सूर्य, चन्द्रमा और तारों को देखता है। ये सभी वस्तुएं उसके तथ्यात्मक जगत का निर्माण करती हैं। इस प्रकार वह विविध वस्तुओं के बीच अपने को पाता है। उन्हीं वस्तुओं से वह भोजन, पानी, हवा आदि प्राप्त कर अपना जीवन चलाता है। उन वस्तुओं का उपयोग अपने लिए करने के कारण वह वस्तु-जगत् का एक प्रकार से सम्राट बन जाता है। अपनी विविध इच्छाओं की तृप्ति भी बहुत सीमा तक वह वस्तु-जगत् से ही कर लेता है। यह मनुष्य की चेतना का एक आयाम है।

धीरे-धीरे मनुष्य की चेतना एक नया मोड़ लेती है। मनुष्य समझने लगता है कि इस जगत में उनके जैसे दूसरे मनुष्य भी हैं, जो उसकी तरह हंसते हैं, रोते हैं, सुखी-दुःखी होते हैं। वे उसकी तरह विचारों, भावनाओं और क्रियाओं की अभिव्यक्ति करते हैं। चूंकि मनुष्य अपने चारों ओर की वस्तुओं का उपयोग अपने लिए करने का अभयस्त होता है, अतः वह अपनी इस प्रवृत्ति के वशीभूत होकर मनुष्यों का उपयोग

* डॉ कमलचन्द सौगाणी, पूर्व : मुख्य संपादक, Encyclopedia of Jainism ; अध्यक्ष, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर ; निदेशक, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर ; सदस्य, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्।

The Problem of *Samjñā* in Jain Epistemology and Psychology

Tulsi Prajñā
50 (197)
April-June, 2023
ISSN : 0974-8857

Muni Kaushal Kumar*

Abstract

An individual's cognitive capacity is referred to as *Samjñā* in Jain epistemology. Jain psychology considers it an instinct. However, *Samjñā* is often defined as the instinctual property of an individual with a materialistic stance. But, souls naturally display their inclination to both materialistic and non-materialistic attitudes. It has been observed that the inclination (both) changes with effort. The Jain psychologists believe that souls who are inclined to sensory pleasures are the fruition of their respective karma, and they call this phenomenon '*Samjñā*'. This thus became a famous notion and gradually the only notion of *Samjñā* for the Jains. On the other hand, there are souls that are also inclined, naturally or intentionally, to stay away from sensory pleasures. Jain psychologists believe such a behavior is due to *kṣayapojama* (destruction – cum-suppression) of karma, but there is no such term described for such a phenomenon.

Such a phenomenon if not considered to be an attribute of *Samjñā*, then a bigger question would be to answer the construction of a void in the structure of instincts (in Jainism). Several things have values that transcend beyond materialism. As a sensation, *Samjñā* can be experienced in both spiritually centered and worldly oriented lifestyles. As a desire-driven thought the onus of decision-making rests on it. It presents a dichotomy between instinctive behavior and acquired traits. This research paper on analysing the evolution of *Samjñā* persuades the reader to understand its significant place in Jaina studies. It argues how a dichotomy in its structural classification can initiate a dialogue with the modern sciences.

Keywords:

Samjñā, Jain Psychology, Jain Epistemology, Psychology, Instincts, Mind, Spirituality, Acquired Traits, Cognitive, Behaviour.

* **Muni Kaushal Kumar**, Research Scholar, Dept. of Jainology and comparative Religion & Philosophy, Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun, Rajasthan.

Religious Engagement: Virtue Ahimsā

Tulsi Prajñā
50 (197)
April-June, 2023
ISSN : 0974-8857

Samani Rohini Pragya*

Abstract

Virtue *Ahimsā* as proposed in this article is the inculcation of values among kids and teens through religious engagement. It incorporates the experiences of field trip as ethnographic work undertaken in twin cities of Gujarat: Ahmedabad and Surat, Baitu (Rajasthan near Jodhpur) and Nagpur (Maharashtra) during the year 2021 and 2023. In 2021 the duration of engagement with kids was of six months in Ahmedabad and in the year 2023 it was approximately, one month at Ahmedabad and three weeks at Surat, eight days at Baitu and two weeks at Nagpur. The present article shows that religious engagement is one of the most powerful and interesting tools of enhancing virtue *ahimsā*. *Ahimsā* in Jainism is most notably understood as ‘no harm’¹. It further elaborates it at mental, verbal, and physical level. In religious engagement held at various cities of India, the *ahimsā* virtue is seen to be extended at the level of heart, communication, behavior and much more through the creative performances of the participants..

Key Words

Religious Engagement, *Ahimsā*, Virtue, Story Telling.

How can one engage individuals in religion and religious affairs in contemporary context? Addressing this question can be done fairly once we learn what interests’ individuals. Further, interests can be created through social grouping, totems, and taboos from various cultures and religious groups across the globe. Such a combination bring novelty in practices and asks to engage oneself for learning new things and then its adaptation for a better life and living. The underling idea is engagement naturally boosts creativity. ‘Story telling’ is one of the powerful tools for comprehensive religious engagement irrespective of all kinds of differences. Such an engagement starts to underestimate the concepts that needs to be revisited. No doubt such underlining

* **Samani Rohini Pragya**, Associate Professor, Dept. of Nonviolence and Peace, Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun, Rajasthan.

Psycho-Social Studies to Investigate Effects of Yoga-Preksha-Dhyan on Aggressiveness of School Children (Urban Area)

Tulsi Prajñā
50 (197)
April-June, 2023
ISSN : 0974-8857

Prof. Viney Jain*

List of Abbreviations:

AA:	Arachidonic acid ANCOVA:
	Analysis of covariance
ANS:	Autonomic nervous system
APP:	Aggressiveness Prevention Programs
AP-Score:	Academic Performance Score
ART:	Aggression Replacement Technique
Bpm:	Beats per minute
CBT:	Cognitive behavioral therapy
CPP:	Coping Power Program
DHA:	Docosahexaenoic acid
EFA:	Essential fatty acids
ELISA:	Enzyme linked immune-sorbent assay
ES:	Effect Size
GSR:	Galvanic Skin Conductance
HF:	High Frequency
HPA:	Hypothalamus-pituitary-adrenal
HR:	Heart Rate
HRV:	Heart Rate Variability
LF:	Low Frequency
LSES:	Low socio-economic status
NCRB:	National Crime Record Bureau

* **Prof. Viney Jain**, Emeritus Professor, Dept. of Yoga and Science of Living, Jain Vishva Bharati Institute (Deemed-to-be University), Ladnun-341306, Rajasthan.

Reading Dalit Politics in Uttar Pradesh: Conflicts and Cooperation

Tulsi Prajñā
50 (197)
April-June, 2023
ISSN : 0974-8857

Dr Abnish Kumar*

Dr Rashmita Ray**

Prof. Asutosh Pradhan***

Abstract

The history of the marginalised caste politics in Uttar Pradesh began since 1950 onwards. Several political parties were born based on the casteist ideologies. But in the recent times a decline in caste-based politics is observed in the state of Uttar Pradesh if the three consecutive election results are to be considered. In recent times, a shift of political loyalty is seen towards that party which promises development for the Dalit class in true sense of the term and not just as a bait for election propaganda. Their subalternity is politicised by different political parties to gain political benefits. However, with the progressing times, with proper educational facilities and social media revolution, the voice of the marginalised is heard, thereby securing a political position for themselves. This article is an attempt to analyse the caste-based politics in the state of Uttar Pradesh in India.

Key Words

Dalit, Subaltern, Political Parties, Conflict, Cooperation, Scheduled Castes.

"The subaltern cannot speak."

- Gayatri Chakravorty Spivak

* **Dr Abnish Kumar**, Assistant Professor, Department of Sociology, K.G.K. (P.G.) College Moradabad, U.P.

** **Dr Rashmita Ray**, Assistant Professor, Department of Social Work, Mahatma Gandhi Central University, Motihari, Bihar.

*** **Prof. Asutosh Pradhan**, Professor, Department of Social Work, Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala.

Tulsī Prajñā Research Journal (TPRJ)

Guideline for Writers

1. It is policy decision for TPRJ that editors reserve the right to make final alterations in the text, on linguistic and stylish grounds, so that entry conforms to the uniform standard required for the journal.
2. Only Original, Authentic, Useful, Unpublished articles/papers will be accepted. The article once published in TPRJ cannot be published elsewhere without permission means the Copy right of the article published in the TPRJ shall remain vested with the journal.
3. Two Type script copies of the Manuscript along with Soft copy (Word File) in CD or email has to be submitted on appropriate addresses.
4. Writers are expected to provide short resume including contact details: postal address, email ID and Contact Numbers. (Format is provided on previous page)
5. The paper can be sent to authors again for upgrading it on basis of comments from experts.
6. The following are instructions for preparing the script:
 - Format of Article: Abstract (not more than 200 words), Key Words, Introduction, Problem, Research Methodology if any, Main Content, Research Design if any, Findings, Conclusion, Reference, Bibliography.
 - Font Type: Times New Roman /Krutidev010 respectively for English/Hindi.
 - Font Size: English 14/12/10 respectively for Heading/Main body/Reference. Hindi 16/14/12 respectively for Heading/ Main body/Reference.
 - Spacing : One and half for lines and double for Paragraph
 - Words: 4000-6000 words i.e. 10-15 Typed A4 Size Papers
 - Reference Type: MLA (8th edition)
Link up for more help: <http://www.easybib.com/guides/citation-guides/mla-8/>
for examples: for journals and books respectively
Kincaid, Jamaica. "In History." Callaloo, vol. 24, no. 2, Spring 2001, pp. 620-26.
Jacobs, Alan. The Pleasures of Reading in an Age of Distraction. Oxford UP, 2011.
 - Reference Style : End note
 - Alignment: Justify
 - Quotation: verbatim et literatim (exact) with original: three dots to indicate ellipsis: in double inverted commas.
 - For the Manuscript prepared in English, The Words and /or citations from Sanskrit or any language other than English have to be in Roman Script, fully italicize and with standard diacritical marks.

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN

PUBLICATION LIST

SL	Publication	Writer/Editor	Price
BOOKS			
01.	जैन-प्रबोधन : जैन दृष्टि	प्रो. बच्छराज दूगड़	140
02.	पूज्यपादेन आचार्यमहाप्रज्ञेन प्रणीता जैनन्यायपरिचाशती (न्यायप्रकाशिकाव्याख्यायुता)	पं. विश्वनाथ मिश्र	100
03.	प्राकृत भाषा प्रबोधिनी	डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा	250
04.	जैनधर्मदर्शन का ऐतिहासिक विकासक्रम	डॉ. सागरमल जैन	700
05.	आचार्य महाप्रज्ञ का अवदान	प्रो. जिनेन्द्र जैन, प्रो. बी.एल. जैन	450
06.	आचार्य महाप्रज्ञ का हिन्दी साहित्य का अवदान	प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी	300
07.	जैन आगमों का सामान्य ज्ञान (प्रथम एवं द्वितीय भाग)	डॉ. महावीर राज गेलड़ा	250
08.	अपभ्रंश साहित्य का इतिहास	प्रो. प्रेम सुमन जैन	950
09.	Bhagavati Aaradhana	Dr. Dalpat Singh Baya	1995
10.	Teaching English : Trends and Chalenges	Dr. Sanjay Goyal	300
11.	Anekanta : Philosophy and Practice	Prof. Anil Dhar	250
12.	Studies in Jaina Agamas	Prof. Dayanand Bhargav	550
13.	Various Dimensions of Social Culture	Prof. Damodar Shastri, Dr. Bijendra Pradhan, Dr. Hemlata Joshi	350
14.	Jain View of Reality: A Hermeneutic Interpretation	Dr. Samani Rohini Prajna	450
15.	Corporate Sector and Value Orientation	Dr. Jugal Kishor Dadhich	170
16.	Jain Philosophy : A Scientific Approach to Reality	Ed. Prof. Samani Chaitanya Prajna, Narayan Lal Kachhara, Narendra Bhandari, Kaushala Prasad Mishra	150
ENCYCLOPEDIA			
01.	जैन पारिभाषिक शब्दकोश	मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा	995
02.	जैन न्याय पारिभाषिक कोश	प्रो. दामोदर शास्त्री	500
03.	दृष्टांत कोश	प्रो. दामोदर शास्त्री	375
04.	Jain Paribhasika Sabdakosa	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrutavibha	1125
05.	Bibliography of Jaina Literature, Vol. I	Dr. Samani Aagam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya, Dr. Vandana Mehata	1200
06.	Bibliography of Jaina Literature, Vol. II	Dr. Samani Aagam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya, Dr. Vandana Mehata	1200
MONOGRAPH SERIES			
01.	Introduction to Jainism	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha	125
02.	Jain Doctrine of Reality	Dr. Samani Shreyas Prajna, Dr. Samani Amal Prajna	125
03.	Jain Doctrine of Knowledge	Dr. Sadhvi Chaitanya Prabha	125
04.	Jain Doctrine of Karma	Prof. Samani Riju Prajna, Sarika Surana	125
05.	Jain Doctrine of Anekant	Dr. Samani Shashi Prajna	125
06.	Jain Doctrine of Naya	Prof. Anekant Kuamr Jain	125
07.	Jain Doctrine of Nine Tattvas	Prof. Pradyuman Singh Shah	125
08.	Jain Doctrine of Six Essentials	Dr. Arihant Kumar Jain	125
09.	Jain Doctrine of Aparigraha	Prof. Sushma Singhvi, Dr. Rudi Jansma	125
10.	Jain Doctrine of Nyaya	Prof. Samani Riju Prajna, Dr. Samani Shreyas Prajna	125
11.	Jain Doctrine of Dreams	Dr. Sadhvi Rajul Prabha	125
12.	Jainism : A Living Realism	Prof. S.R. Vyas	125
13.	An Introduction to Preksha Meditation	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha	125